INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 4 | MAY – 2025

दम तोड़ती नदियाँ: एक बढ़ती पर्यावरणीय चुनौती
(Dying Rivers: An Intensifying Environmental Crisis)

डॉ. खुशबू

1. सारांश :

नदियाँ पृथ्वी पर जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे न केवल जल का स्रोत हैं, बल्कि कृषि, उद्योग, जैव विविधता और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। किंतु वर्तमान समय में औद्योगीकरण, शहरीकरण, कृषि में रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, घरेलू अपशिष्ट तथा लापरवाह मानवीय गतिविधियों के कारण नदियाँ गंभीर प्रदूषण की चपेट में आ गई हैं। भारत में गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा जैसी प्रमुख नदियाँ तो प्रदूषण के उच्च स्तर तक पहुँच ही चुकी हैं, साथ ही उत्तर प्रदेश की टोंस (तमसा) जैसी मध्यम आकार की नदियाँ भी जलवायु परिवर्तन और स्थानीय अपशिष्ट प्रबंधन की विफलता के कारण तेजी से दम तोड़ रही हैं। तमसा नदी, जो अयोध्या जैसे सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों से होकर बहती है, अब प्रदूषण के कारण अपने अस्तित्व के संकट का सामना कर रही है। यदि यह स्थिति बनी रही, तो नदियों का प्रदूषण न केवल जल संकट को बढ़ाएगा, बल्कि जैव विविधता, कृषि उत्पादन और सामाजिक-धार्मिक जीवन पर भी गहरा प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। यह शोधपत्र नदी प्रदूषण के प्रमुख कारणों, इसके पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों तथा संभावित समाधान उपायों पर प्रकाश डालता है, और विशेष रूप से मध्यम और क्षेत्रीय नदियों के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है।

2. परिचय :

नदियाँ मानव सभ्यता की जीवनरेखा रही हैं। प्राचीन काल से ही विश्व की अनेक महान सभ्यताएँ - जैसे सिंधु घाटी, मिस्र, मेसोपोटामिया, और चीन की सभ्यता नदियों के किनारे विकसित हुईं, क्योंकि जल स्रोत कृषि, व्यापार, परिवहन और जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए अनिवार्य थे। भारत में भी नदियों का अत्यधिक धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व रहा है। गंगा, यमुना, सरस्वती और तमसा जैसी नदियाँ केवल जलधाराएँ नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का आधार रही हैं। किंतु आधुनिक समय में बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण, अनियंत्रित कृषि रसायनों का उपयोग, घरेलू अपशिष्ट और जलवायु परिवर्तन के कारण नदियाँ गंभीर प्रदूषण संकट का सामना कर रही हैं। आज गंगा और यमुना जैसी प्रमुख नदियाँ ही नहीं, बल्कि तमसा (टोंस) जैसी मध्यम आकार की नदियाँ भी तेजी से दम तोड़ रही हैं। जल गुणवत्ता में गिरावट, जैव विविधता का विनाश, और जलजनित रोगों की वृद्धि जैसी समस्याएँ न केवल मानव जीवन को प्रभावित कर रही हैं, बल्कि पारिस्थितिक संतुलन को भी बिगाड़ रही हैं। यदि तत्काल ठोस संरक्षण प्रयास नहीं किए गए, तो आने वाली पीढ़ियाँ नदियों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्त्व से वंचित रह जाएँगी। अतः इस शोध में नदी प्रदूषण के कारणों, प्रभावों और संभावित समाधान उपायों का विश्लेषण किया गया है, ताकि जीवनदायिनी जलधाराओं को पुनर्जीवित करने के मार्ग तलाशे जा सकें।

3. साहित्य समीक्षा : भारतीय नदियों के प्रदूषण, जल संरक्षण और पर्यावरणीय प्रबंधन से संबंधित विषयों पर उल्लेखनीय कार्य उपलब्ध है। प्रस्तुत समीक्षा में वर्तमान में प्रकाशित और सुलभ प्रमुख पुस्तकों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

3.1 "जल संरक्षण और प्रबंधन" — डॉ. बी.एल. पाठक (2015)

यह पुस्तक जल संरक्षण के विभिन्न पहलुओं जैसे नदियों के प्रवाह, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और मानवजनित प्रदूषण का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। लेखक ने जल संचयन और अपशिष्ट जल पुनःचक्रण जैसे व्यावहारिक समाधान भी सुझाए हैं।

3.2 "पर्यावरण प्रदूषण" — डॉ. एम.पी. सिंह (2017)

डॉ. सिंह ने वायु, जल, मृदा और ध्वनि प्रदूषण सहित पर्यावरण संकटों का समग्र विश्लेषण किया है। जल प्रदूषण पर विशेष ध्यान देते हुए, घरेलू सीवेज, औद्योगिक अपशिष्ट और जल गुणवत्ता मानकों पर सरल भाषा में प्रकाश डाला गया है।

3.3 "भारत में जल संकट और समाधान" — डॉ. वी.के. अग्रवाल (2018)

इस पुस्तक में शहरीकरण, औद्योगीकरण और भूजल दोहन से उत्पन्न जल संकट का वर्णन किया गया है। साथ ही नदी संरक्षण अभियानों और विकेन्द्रीकृत जल प्रबंधन के उपायों पर भी विस्तार से चर्चा की गई है।

3.4 "नदी और सभ्यता" — प्रो. राजेश्वरी प्रसाद (2016)

प्रो. प्रसाद ने नदियों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व को रेखांकित करते हुए, नदियों के क्षरण को एक सभ्यता संकट के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने विशेष रूप से पौराणिक नदियों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है।

3.5 "भारत में नदी प्रदूषण और समाधान" — डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी (2019)

डॉ. तिवारी ने भारतीय नदियों की प्रदूषण स्थिति, जल गुणवत्ता सूचकांक (WQI), और पुनर्जीवन रणनीतियों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने नदी स्वास्थ्य सूचकांक (RHI) जैसे नए मापदंडों की भी चर्चा की है।

3.6 बैरो (2006) द्वारा लिखित *Environmental Management for Sustainable Development* वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जल संसाधन प्रबंधन और सतत विकास के सिद्धांतों को प्रस्तुत करती है, जो भारतीय संदर्भ में भी लागू किए जा सकते हैं।

3.7 वाल्दिया (2004) की *Indian Rivers: Scientific and Socio-economic Aspects* पुस्तक भारतीय नदियों के भूगोल, पारिस्थितिकी और समाजशास्त्र के विभिन्न पहलुओं का समेकित अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें नदी आजीविका सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन के बीच संबंधों को रेखांकित किया गया है।

4. अनुसंधान पद्धति :

यह शोध गुणात्मक (गुणवत्ता-आधारित), विवरणात्मक (वर्णनात्मक), और विश्लेषणात्मक (विश्लेषण-आधारित) प्रकृति का है, जिसका उद्देश्य उत्तर प्रदेश की टोंस (तमसा) नदी के संदर्भ में नदियों के प्रदूषण से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट का बहुआयामी अध्ययन करना है। शोध में सामाजिक, पारिस्थितिक, एवं सांस्कृतिक प्रभावों का समेकित विश्लेषण किया गया है।

4.1 डेटा संग्रहण :

प्राथमिक स्रोत: टोंस नदी से लगे जिले - फैज़ाबाद (अयोध्या), अंबेडकर नगर, आज़मगढ़ एवं मऊ जैसे क्षेत्रों में किए गए प्रत्यक्ष अवलोकन, अनौपचारिक साक्षात्कार, स्थानीय निवासियों, मछुआरों और किसानों से संवाद।

द्वितीयक स्रोत: केंद्रीय जल आयोग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, राज्य सरकार की रिपोर्टें, शोध पत्र, समाचार लेख, केस स्टडी, और पर्यावरणीय संस्थाओं की दस्तावेज़ी जानकारी।

4.2 शोध की सीमा : यह अध्ययन मुख्यतः टोंस नदी से तो संबंधित पर्यावरणीय संकट, उसके सामाजिक प्रभाव, प्रशासनिक उपेक्षा, और जल-प्रबंधन की विफलताओं तक सीमित है। इसमें विशेष बल नदी के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और पारिस्थितिक महत्त्व के क्षरण पर दिया गया है। शोध में अन्य नदियों का उल्लेख केवल तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में किया गया है, जिससे टोंस नदी की समस्या को व्यापक संदर्भ में समझा जा सके।

5. चर्चा एवं विश्लेषण :

भारत में नदियों के प्रदूषण और पर्यावरणीय संकट की व्यापकता को समझने के लिए विभिन्न कारणों का गहन विश्लेषण आवश्यक है। इसमें औद्योगीकरण, शहरीकरण, धार्मिक गतिविधियाँ और नीतिगत कमियाँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत अनुभाग में क्रमशः इन विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

5.1 औद्योगीकरण और नदियों का पारिस्थितिक संकट : भारत में औद्योगीकरण ने आर्थिक विकास और रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इसके गंभीर पर्यावरणीय दुष्परिणाम भी सामने आए हैं। औद्योगिक इकाइयाँ बिना किसी उपचार के रासायनिक अपशिष्ट, भारी धातुएँ (जैसे आर्सेनिक, पारा, सीसा) तथा विषाक्त जल नदियों में प्रवाहित करती हैं। इससे न केवल जल की गुणवत्ता में गिरावट आती है, बल्कि जलीय जैवविविधता पर भी गहरा संकट उत्पन्न होता है (पाठक, 2015, पृ. 88)।

थर्मल पावर प्लांट्स से निकलने वाले गर्म जल के प्रवाह से ऑक्सीजन की मात्रा घटती है, जिससे मछलियों और अन्य जलीय जीवों की मृत्यु दर में वृद्धि होती है। यह संकट केवल पारिस्थितिकी तक सीमित नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और जल सुरक्षा को भी प्रभावित कर रहा है।

5.2 शहरीकरण और अपशिष्ट प्रबंधन की विफलता : तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण ने नदी तंत्र पर अभूतपूर्व दबाव डाला है। नगरों से निकलने वाला घरेलू सीवेज, ठोस अपशिष्ट, प्लास्टिक और रसायनयुक्त पानी अधिकांशतः बिना किसी ट्रीटमेंट के सीधे नदियों में प्रवाहित किया जा रहा है। घरेलू अपशिष्ट नदियों के प्रदूषण का मुख्य स्रोत है, जो कुल जल प्रदूषण भार का लगभग 80% योगदान देता है (सिंह, 2017, पृ. 112)।

सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स (STPs) की अनुपस्थिति, अतिक्रमण, और अनियंत्रित भवन निर्माण नदी के प्राकृतिक प्रवाह में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। परिणामस्वरूप जल स्तर घट रहा है, जल पुनर्भरण ठप हो रहा है, और नदी धीरे-धीरे एक गंदा नाला बनती जा रही है।

5.3 धार्मिक आस्थाएँ और नदियों में सांस्कृतिक प्रदूषण: भारत में नदियों को देवी स्वरूप माना गया है और धार्मिक अनुष्ठानों में उनका केंद्रीय स्थान है। मूर्तियाँ, पूजन सामग्री, वस्त्र, राख, फूल-मालाएँ, और तेल जैसे अपशिष्ट बिना किसी पूर्व उपचार के सीधे नदियों में विसर्जित किए जाते हैं। "नदी केवल जलधारा नहीं, अपितु संस्कृति, सभ्यता और अस्तित्व की जीवनरेखा है" (प्रसाद, 2016, पृ. 45)।

यह परंपरा श्रद्धा से जुड़ी होने के बावजूद जलीय पर्यावरण के लिए गंभीर संकट बन गई है। प्रयागराज के महाकुंभ 2025 के दौरान यह स्थिति और भी विकराल हो गई। करोड़ों श्रद्धालुओं के स्नान और पूजन गतिविधियों से भारी मात्रा में ठोस, जैविक और रासायनिक कचरा गंगा में प्रवाहित हुआ। राज्य सरकार द्वारा अस्थायी ट्रीटमेंट और सफाई की व्यवस्थाएँ की गईं, परंतु कई घाटों पर गंदगी और अपशिष्ट का जमाव देखा गया। यह उदाहरण दर्शाता है कि धार्मिक आयोजनों के पर्यावरणीय प्रबंधन हेतु संरचित योजना और सामुदायिक सहयोग की सख्त आवश्यकता है।

5.4 भारत की प्रमुख संकटग्रस्त नदियाँ: गंगा, यमुना, गोमती, हिंडन, दामोदर, साबरमती, और वरुणा जैसी नदियाँ आज देश में गंभीर जल प्रदूषण की शिकार हैं। कानपुर, प्रयागराज और वाराणसी से गंगा में फैलता औद्योगिक और धार्मिक कचरा; दिल्ली-नोएडा से यमुना में

गिरता सीवेज और रसायन; लखनऊ की गोमती; और पश्चिमी यूपी की काली व हिंडन— ये सभी दर्शाते हैं कि भारत की नदियाँ बहुआयामी संकट से जूझ रही हैं।

भारत में प्रतिवर्ष औसतन 210 **बिलियन घन मीटर अपशिष्ट जल** उत्पन्न होता है, जिसमें से केवल 30% का ही उपचार किया जाता है (अग्रवाल, 2018, पृ. 134)।

इस राष्ट्रीय संकट के मध्य, उत्तर प्रदेश की एक मध्यम आकार की नदी — टोंस (तमसा) — भी तेज़ी से प्रदूषण की चपेट में आ रही है। इसका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व होने के बावजूद, यह नदी भी अब गंभीर प्रदूषण संकट का हिस्सा बन चुकी है, जिसके संरक्षण के लिए क्षेत्रीय प्रयासों की तत्काल आवश्यकता है।

6. क्षेत्रीय अध्ययन: उत्तर प्रदेश राज्य की टोंस (तमसा) नदी :

6.1 भौगोलिक स्वरूप, सांस्कृतिक महत्त्व और पर्यावरणीय संकट : तमसा नदी, जिसे सामान्यतः टोंस नदी के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर प्रदेश के अयोध्या, अंबेडकर नगर, आज़मगढ़, मऊ और बलिया जैसे जनपदों के लिए न केवल पारिस्थितिक और आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और पौराणिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह नदी भारतीय लोकमानस, धार्मिक साहित्य और ऐतिहासिक स्मृतियों से गहराई से जुड़ी हुई है।

पौराणिक और सांस्कृतिक महत्त्व: तमसा नदी का उल्लेख रामायण काल से प्राप्त होता है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस* में वर्णन है कि भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण ने वनगमन के प्रथम रात्रि में इस नदी के तट पर विश्राम किया था:

"प्रथम वास तमसा भयो, दूसर सुरसरि तीर।"

इसके अतिरिक्त यह भी मान्यता है कि महर्षि वाल्मीकि का आश्रम इसी नदी के किनारे स्थित था, जहाँ माता सीता ने लव और कुश को जन्म दिया था। इस प्रकार, तमसा नदी केवल एक भौगोलिक धारा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना और ऐतिहासिक परंपरा का एक जीवंत प्रतीक है।

6.2 उद्गम और प्रवाह: तमसा नदी का उद्गम उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद के मवई ब्लॉक के अंतर्गत स्थित बसौढ़ी गाँव के निकट एक प्राकृतिक सरोवर से होता है। हाल के प्रशासनिक दस्तावेजों एवं नदी पुनर्जीवन अभियान (2019, अयोध्या प्रशासन) में इसके उद्गम स्थल के रूप में लखनिपुर गाँव का भी उल्लेख प्राप्त होता है। भूगोल की दृष्टि से बसौढ़ी और लखनिपुर दोनों एक ही जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area) में स्थित हैं, जहाँ वर्षा जल और स्थानीय जलधाराएँ मिलकर इस नदी का प्रारंभ करती हैं। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसका संयुक्त उद्गम बसौढ़ी-लखनिपुर क्षेत्र माना जाना उपयुक्त है। नदी अयोध्या जनपद के रुदौली, अमानीगंज, सोहावल, मिल्कीपुर, मसौधा, बीकापुर और तारुन विकास खंडों से होकर बहती है और गोसाईगंज के समीप अयोध्या तथा अंबेडकर नगर की सीमा का निर्माण करती है। तत्पश्चात यह अंबेडकर नगर जनपद में प्रवेश करती है, जहाँ कटेहरी क्षेत्र में इसका संगम बिसुही नदी से होता है। संगम के उपरांत इसे प्रायः टोंस नदी के नाम से जाना जाता है। इसके बाद यह नदी आज़मगढ़ और मऊ जनपदों से होकर बहती हुई सरयू नदी में विलीन हो जाती है। तमसा नदी की अनुमानित कुल लंबाई लगभग 264 किलोमीटर है।

6.3 वर्तमान स्थिति और पर्यावरणीय संकट: तमसा नदी, जो कभी सांस्कृतिक पवित्रता और पारिस्थितिक समृद्धि की प्रतीक थी, आज गंभीर प्रदूषण की चपेट में है। औद्योगीकरण, शहरीकरण, अनियंत्रित कृषि रसायनों का प्रयोग, और जनसंख्या वृद्धि जैसे कारकों के कारण इसका जल स्तर एवं गुणवत्ता दोनों में निरंतर गिरावट देखी जा रही है। विशेषतः अंबेडकर नगर जनपद के अकबरपुर क्षेत्र में यह नदी कभी कृषि, पेयजल आपूर्ति और पारिस्थितिकीय संतुलन की रीढ़ मानी जाती थी। किंतु वर्तमान में अवसरवादी निर्माण कार्यों, सीवेज प्रवाह, और अनुपचारित कचरे के कारण यह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो चुका है और इसमें पाई जाने वाली स्थानीय जैव विविधता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

संरक्षण प्रयासों के अभाव में तमसा नदी आज एक उपेक्षित जलधारा बन चुकी है। यदि समय रहते प्रभावी जल प्रबंधन, कचरा नियंत्रण और सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित नहीं की गई, तो यह नदी भी भारत की अन्य मृतप्राय नदियों की सूची में सम्मिलित हो सकती है।

7. टोंस (तमसा) नदी — जिलेवार अध्ययन

7.1 टोंस (तमसा) नदी — जनपद अयोध्या

तमसा (टोंस) नदी अयोध्या ज़िले की एक प्रमुख **धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय धरोहर** है। इसका उद्गम **मवई क्षेत्र स्थित लखनिपुर गाँव** के निकट एक प्राकृतिक सरोवर से माना जाता है। यह नदी जिले के **अमानीगंज, रुदौली, सोहावल, मिल्कीपुर, मसौधा, बीकापुर और तारुन** विकासखंडों से होकर बहती है तथा **गोसाईगंज** के समीप अंबेडकर नगर ज़िले की सीमा बनाती है। **भौगोलिक दृष्टि से** तमसा नदी का प्रवाह समतल मैदानों और कृषि भूमि से होकर होता है, जहाँ इसके जल का उपयोग **पारंपरिक रूप से सिंचाई, पशुपालन, घरेलू उपयोग और धार्मिक क्रियाकलापों** में किया जाता रहा है। ***रामचरितमानस*** में इसका विशेष उल्लेख है, जहाँ इसे **भगवान श्रीराम के वनगमन के प्रथम विश्राम स्थल** के रूप में दर्शाया गया है। साथ ही, ऐसा भी विश्वास है कि **महर्षि वाल्मीकि का आश्रम** इसी नदी के तट पर स्थित था। वर्तमान में यह नदी **तेज़ी से बढ़ते प्रदूषण के संकट** का सामना कर रही है। **ग्राम्य और अर्ध-शहरी क्षेत्रों से निकलने वाला घरेलू अपशिष्ट, कृषि रसायनों का बहाव**, तथा **धार्मिक गतिविधियों से उत्पन्न कचरा** नदी में बिना किसी शोधन के प्रवाहित किया जा रहा है। इससे नदी की **जल गुणवत्ता में गिरावट, जैव विविधता का क्षरण**, और **सामुदायिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव** देखने को मिल रहा है।

हालाँकि अयोध्या प्रशासन और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा कुछ **प्रारंभिक प्रयास** किए गए हैं, लेकिन नदी के संरक्षण के लिए **स्थायी और सामूहिक रणनीति की आवश्यकता** है। यदि समय रहते **जल प्रबंधन, जन-जागरूकता और जैविक पुनर्जीवन कार्यक्रम** नहीं चलाए गए, तो यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नदी अपना पारिस्थितिक अस्तित्व खो सकती है।

7.2 टोंस (तमसा) नदी — जनपद अंबेडकर नगर (अकबरपुर)

अकबरपुर शहर टोंस नदी के किनारे स्थित है, जो शहर को दो भागों में विभाजित करती है: अकबरपुर और शाहजादपुर। यह नदी अतीत में इस क्षेत्र के लिए एक प्रमुख सिंचाई स्रोत रही है। नदी के जल का उपयोग आसपास के कृषि क्षेत्रों में फसलों की सिंचाई के लिए किया जाता था, जिससे स्थानीय कृषि उत्पादन में वृद्धि होती थी। वर्तमान में टोंस (तमसा) नदी का जल स्तर और जल गुणवत्ता दोनों ही गंभीर रूप से प्रभावित हो चुके हैं। तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण और अनुपचारित घरेलू तथा औद्योगिक अपशिष्ट के सीधे नदी में प्रवाह के कारण नदी का प्राकृतिक पारिस्थितिक संतुलन गम्भीर खतरे में है। इस प्रदूषण का सीधा प्रभाव कृषि क्षेत्र पर पड़ा है, क्योंकि जल गुणवत्ता में गिरावट के कारण किसान अब सिंचाई के लिए वैकल्पिक जल स्रोतों की तलाश करने पर मजबूर हो गए हैं, जिससे स्थानीय कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय कमी आई है। साथ ही, दूषित जल के संपर्क में आने से स्थानीय समुदायों में जलजनित रोगों, जैसे डायरिया, पीलिया और त्वचा संक्रमण की घटनाओं में वृद्धि देखी गई है, जो जनस्वास्थ्य के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। पारिस्थितिक दृष्टि से भी स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि नदी के जल में घुलित ऑक्सीजन (DO) स्तर के घटने और भारी धातुओं की उपस्थिति बढ़ने के कारण मछलियों और अन्य जलीय जीवों की संख्या में भारी गिरावट आई है, जिससे स्थानीय जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यदि वर्तमान प्रदूषण प्रवृत्ति पर रोक नहीं लगाई गई, तो निकट भविष्य में यह नदी अपने प्राकृतिक और सामाजिक दोनों ही स्वरूप को खो सकती है।

7.3 टोंस (तमसा) नदी — जलालपुर, जनपद अंबेडकर नगर

अंबेडकर नगर जनपद की एक प्रमुख तहसील **जलालपुर** भी है, जहाँ से टोंस (तमसा) नदी का प्रवाह होता है। अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके बचपन में यह नदी जल से परिपूर्ण रहती थी और इसका प्रवाह तेज़ हुआ करता था। बच्चे इसमें स्नान करते थे, जानवर इसका जल पीते थे, और धोबी कपड़े धोने के लिए इसी नदी का उपयोग करते थे। किन्तु वर्तमान में प्रदूषण के कारण इन सभी गतिविधियों का पूर्णतः अवसान हो चुका है। नदी का जल अब अत्यंत प्रदूषित हो गया है, जिससे मछलियों की संख्या में भी भारी गिरावट आई है।

नदी के तटवर्ती गाँवों में **गौड़ जाति** के लोग निवास करते हैं, जिनका पारंपरिक व्यवसाय मछली पकड़ना था। मछलियाँ उनके आजीविका का मुख्य स्रोत थीं। किन्तु अब प्रदूषण के चलते मछलियों की संख्या में भारी कमी आई है, विशेष रूप से **झींगा मछली (Prawn)** लगभग विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुकी है। इसका सीधा प्रभाव इन समुदायों के जीवन यापन पर पड़ा है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई है। वर्तमान में केवल वर्षा ऋतु के दौरान ही नदी में पर्याप्त जल प्रवाह देखने को मिलता है, और उस समय जल कुछ हद तक स्वच्छ प्रतीत होता है। शेष समय में नदी का रंग काला हो जाता है और जल अत्यधिक प्रदूषित रहता है। इस क्षेत्र के कस्बे में करघों (लूम) पर कपड़ा बनाने का कार्य बड़े पैमाने पर होता है। इस प्रक्रिया से उत्पन्न अपशिष्ट जल, साथ ही पूरे कस्बे के नालों और सीवर का मल-जल भी बिना किसी उपचार के सीधे नदी में प्रवाहित किया जाता है। परिणामस्वरूप नदी के जल की गुणवत्ता अत्यंत निम्न स्तर पर पहुँच चुकी है, जिसे देखते हुए प्रदूषण की गंभीरता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

7.4 टोंस (तमसा) नदी — जनपद आज़मगढ़

तमसा नदी अंबेडकर नगर जिले के कटेहरी क्षेत्र में बिसुही नदी से संगम करने के बाद पूर्व दिशा की ओर बढ़ते हुए आजमगढ़ जनपद में प्रवेश करती है। जिले में यह नदी मुख्यतः फूलपुर और मेहनगर तहसीलों के निकटवर्ती क्षेत्रों से बहती है। तमसा नदी आजमगढ़ नगर को तीन ओर से घेरती है और जिले के दक्षिणी तथा दक्षिण-पूर्वी हिस्से में अपना प्रवाह बनाते हुए आगे मऊ जनपद की ओर बढ़ती है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो आजमगढ़ जिले में तमसा नदी का प्रवाह प्रायः समतल और कृषि प्रधान क्षेत्रों से होकर होता है, जहाँ पर इसके तटों के आसपास धान, गन्ना और गेहूँ जैसी फसलें उगाई जाती हैं। नदी के किनारे बसे गाँव और नगर लंबे समय तक इसके जल पर सिंचाई और दैनिक उपयोग के लिए निर्भर रहे हैं। किन्तु बढ़ते शहरीकरण, अनियंत्रित अपशिष्ट प्रवाह और सीवरेज ट्रीटमेंट सुविधाओं के अभाव में आज यह नदी अपने प्राकृतिक स्वरूप और पारिस्थितिक संतुलन को खोती जा रही है।

वर्तमान में आजमगढ़ जिले में तमसा नदी, जो कभी क्षेत्र की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान का प्रतीक रही थी, आज गंभीर प्रदूषण संकट का सामना कर रही है। शहर को तीन ओर से घेरने वाली इस नदी में प्रतिदिन लगभग 17 मिलियन लीटर घरेलू सीवरेज और ठोस अपशिष्ट बिना किसी उपचार के सीधे प्रवाहित किया जा रहा है। नगर क्षेत्र से निकलने वाले 17 से 22 बड़े नालों और कई घरों के शौचालयों की पाइपलाइनें भी नदी से जुड़ी हुई हैं, जिससे जल प्रदूषण की स्थिति अत्यंत भयावह हो गई है। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, नदी के जल में pH, BOD और DO जैसे जल गुणवत्ता मापदंड संतुलन से बाहर हैं; BOD स्तर 3 मिलीग्राम प्रति लीटर से अधिक और घुलित ऑक्सीजन का स्तर न्यूनतम सुरक्षित सीमा से काफी नीचे पाया गया है। गर्मियों में नदी का जल स्तर अत्यंत कम हो जाता है और बचा हुआ पानी काला, गंदा व विषैला हो जाता है, जिससे मछलियों व अन्य जलीय जीवों का जीवन संकट में आ जाता है। कभी यह नदी आचमन योग्य मानी जाती थी, लेकिन अब इसके निकट जाना भी कठिन हो गया है। सीवरेज ट्रीटमेंट संयंत्र (STP) के अभाव और प्रशासनिक उदासीनता के कारण तमसा नदी अपने धार्मिक, पारिस्थितिक और सामाजिक महत्व को खोने के कगार पर पहुँच गई है। यदि शीघ्र ही ठोस और समग्र संरक्षण प्रयास नहीं किए गए, तो यह नदी भविष्य में एक मृत जलधारा में बदल सकती है।

7.5 टोंस (तमसा) नदी — जनपद मऊ

तमसा नदी अंबेडकर नगर और आज़मगढ़ जिलों से बहती हुई **मऊ जिले** के **मेहनगर क्षेत्र** में प्रवेश करती है। यहाँ से यह घोसी उपक्षेत्र से होकर गुजरती है और आगे चलकर सरयू नदी में संगम कर जाती है। भौगोलिक दृष्टि से मऊ जिले में तमसा नदी का प्रवाह मुख्यतः समतल मैदानों और कृषि प्रधान इलाकों से होता है, जहाँ नदी का पारंपरिक उपयोग सिंचाई और स्थानीय जलापूर्ति के लिए किया जाता रहा है। परंतु वर्तमान में यह नदी भी गंभीर प्रदूषण संकट का सामना कर रही है। मऊ नगर क्षेत्र से निकलने वाला घरेलू अपशिष्ट, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों से उत्पन्न कचरा, और विवाह व धार्मिक आयोजनों के दौरान उत्पन्न अपशिष्ट बिना किसी शोधन के सीधे नदी में प्रवाहित किया जा रहा है। साथ ही रसायन युक्त जलधाराओं और गैर-जैविक ठोस कचरे (प्लास्टिक, कपड़ा अपशिष्ट आदि) की भरमार ने नदी के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बुरी तरह क्षति पहुँचाई है। इसके परिणामस्वरूप नदी के तटीय इलाकों में जलजनित बीमारियों, जैसे डायरिया और हैजा, के प्रकोप में वृद्धि देखी गई है तथा मछलियों और अन्य जलीय जीवों की मृत्यु दर में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई है।

उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (UPPCB) के 2023 के पर्यावरणीय अध्ययन के अनुसार, मऊ जिले में तमसा नदी के जल को 'Category IV' श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है, जिसका तात्पर्य है कि नदी का जल केवल औद्योगिक कार्यों के सीमित उपयोग के योग्य है, न कि घरेलू या कृषि उपयोग के लिए। इस स्थिति ने न केवल स्थानीय जैव विविधता को खतरे में डाला है, बल्कि क्षेत्र के कृषि और स्वास्थ्य

पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। यदि शीघ्र ही प्रभावी जल प्रबंधन योजनाएँ लागू नहीं की गईं, तो मऊ जिले में तमसा नदी का पारिस्थितिक और सामाजिक महत्व पूर्णतः समाप्त हो सकता है।

8. निष्कर्ष :

तमसा (टोंस) नदी, जो कभी सांस्कृतिक, धार्मिक, और पारिस्थितिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश की जीवनरेखा रही थी, आज गहन प्रदूषण के संकट से जूझ रही है। अयोध्या, अंबेडकर नगर, आज़मगढ़ और मऊ जैसे जिलों से होकर बहती यह नदी न केवल ऐतिहासिक महत्व की धरोहर है, बल्कि स्थानीय समुदायों की आजीविका, सिंचाई और जैव विविधता के लिए भी अत्यंत आवश्यक रही है। परंतु वर्तमान में औद्योगीकरण, अनियंत्रित शहरीकरण, घरेलू और वाणिज्यिक अपशिष्टों के सीधे प्रवाह, तथा सीवरेज शोधन की अनुपस्थिति ने तमसा नदी के पारिस्थितिक संतुलन को गम्भीर रूप से प्रभावित किया है। प्रदूषित जल ने जहाँ जलजनित रोगों की वृद्धि को जन्म दिया है, वहीं मछलियों की मृत्यु दर, विशेष रूप से झींगा जैसी स्थानीय प्रजातियों की विलुप्ति, पारंपरिक आजीविका पर भी संकट बन गई है। आजमगढ़ में प्रतिदिन 17 से अधिक नालों से अपशिष्ट प्रवाह, मऊ में STP की अनुपस्थिति, और जलालपुर में करघा उद्योगों के प्रदूषक प्रभाव — ये सभी मिलकर नदी को एक मृतप्राय जलधारा की ओर धकेल रहे हैं। नदी का BOD, DO और pH स्तर चेतावनी की स्थिति में पहुँच चुका है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह संकट अब केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी हुई आपदा बन चुका है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि यदि शीघ्र जल शोधन, कचरा प्रबंधन और जैविक पुनर्जीवन के ठोस प्रयास नहीं हुए, तो तमसा नदी अपने अस्तित्व को खो सकती है। यह संकट भारत की अन्य लघु और मध्यम नदियों के लिए भी एक चेतावनी है। अतः अब नीतिगत प्रतिबद्धता, तकनीकी समाधान और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से नदी के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता है।

9. सुझाव :

तमसा नदी के पुनर्जीवन हेतु एक समग्र और सहभागी रणनीति अपनाना आवश्यक है। स्थानीय स्तर पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP) और कचरा पृथक्करण केंद्रों की स्थापना की जाए। औद्योगिक अपशिष्ट की नियमित निगरानी करते हुए गैर-अनुमोदित इकाइयों पर कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। धार्मिक गतिविधियों से उत्पन्न कचरे के लिए कृत्रिम विसर्जन कुंड बनाए जाएँ और वैकल्पिक समाधान बढ़ाए जाएँ। नदी जल गुणवत्ता की नियमित निगरानी और सार्वजनिक रिपोर्टिंग से पारदर्शिता और जन-जागरूकता बढ़ेगी। समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन (CBNRM) के माध्यम से जनसहभागिता सशक्त की जाए तथा विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए। तमसा नदी को 'संरक्षित जलधारा' घोषित कर विशेष राज्यीय योजना के अंतर्गत संरक्षण कार्य तेज किए जाएँ। नदी तटों पर वृक्षारोपण, वेटलैंड संरक्षण और जल पुनर्भरण के उपाय भी अनिवार्य हैं। यदि ये प्रयास समन्वित रूप से किए जाएँ, तो तमसा नदी को पुनः जीवनदायिनी धारा में बदला जा सकता है।

10. संदर्भ सूची

हिंदी स्रोत :

- अग्रवाल, वी.के. (2018). *भारत में जल संकट और समाधान*. वाराणसी: ज्ञान गंगा प्रकाशन.
- केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB). (2020). *प्रदूषित नदी खंडों की सूची और जल गुणवत्ता मानक रिपोर्ट*. नई दिल्ली: भारत सरकार. https://cpcb.nic.in/hindi/index.php
- नागरिक स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG). (2024). *गंगा पुनर्जीवन कार्यक्रम की वर्षांत समीक्षा*. नई दिल्ली: जल शक्ति मंत्रालय. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2096915
- जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार. (2018). *भारत में नदी जल गुणवत्ता की स्थिति रिपोर्ट*. नई दिल्ली: जल शक्ति मंत्रालय. https://jalshakti-dowr.gov.in/hi
- तिवारी, आनंद प्रकाश. (2019). *भारत में नदी प्रदूषण और समाधान*. प्रयागराज: प्रयाग पब्लिकेशन.
- पाठक, बी.एल. (2015). *जल संरक्षण और प्रबंधन*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

- प्रसाद, राजेश्वरी. (2016). *नदी और सभ्यता*. दिल्ली: भारतीय विद्या संस्थान.
- सिंह, एम.पी. (2017). *पर्यावरण प्रदूषण*. दिल्ली: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिशर्स.
- नवभारत टाइम्स. (2025). *महाकुंभ 2025 में संगम जल गुणवत्ता पर CPCB की रिपोर्ट*. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/sangam-water-was-fine-for-bathing-in-maha-kumbh-cpcb-presented-new-report-to-ngt/articleshow/118818892.cms

अंग्रेजी स्रोत :

- Barrow, C. J. (2006). *Environmental management for sustainable development* (2nd ed.). Routledge.
- District Administration, Ayodhya. (2019). *Rejuvenation of life line River Tamsa – A journey to success.* Ayodhya: Government of Uttar Pradesh. https://ayodhya.nic.in/notice/rejuvenation-of-river-tamsa-a-success-story/
- Gleick, P. H. (Ed.). (1993). *Water in crisis: A guide to the world's fresh water resources.* Oxford University Press.
- National Mission for Clean Ganga (NMCG). (2023). *Annual Report – Namami Gange Programme and River Rejuvenation.* Ministry of Jal Shakti, Government of India. https://nmcg.nic.in
- National Mission for Clean Ganga (NMCG). (2023). *Namami Gange Programme: An integrated conservation mission.* Ministry of Jal Shakti, Government of India. https://nmcg.nic.in
- Rajagopalan, R. (2011). *Environmental studies: From crisis to cure* (2nd ed.). Oxford University Press.
- Santra, S. C. (2008). *River pollution in India: Causes and control.* New Age International Publishers.
- Subramanya, K. (2013). *Water resources in India.* Tata McGraw-Hill Education.
- Uttar Pradesh Pollution Control Board (UPPCB). (2023). *Annual Water Quality Report: River Tamasa (Tons) stretch in Eastern UP.* Lucknow: UPPCB. https://uppcb.com
- Valdiya, K. S. (Ed.). (2004). *Indian rivers: Scientific and socio-economic aspects.* Aryan Books International.